DSSSB TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR with ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
MODERN HISTORY
Congress
LIVE
05-07-2024 04:00 PM

1857 की क्रांति

क्रांति – व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करना।

अतिविशिष्ट क्यों :-

1) बहुवर्गीयता थी। (किसान, मजदूर, महिला, व्यापारी, छोटे जमींदार, सैनिक वर्ग)
2) प्रसार क्षेत्र – लगभग सम्पूर्ण उत्तर भारत।
3) अपवाद → बड़े जमींदारों ने अंग्रेजों का साथ दिया।
→ मध्यमशिक्षित वर्ग तटस्थ रहा।

कारण :-

1) राजनीतिक कारण
2) सामाजिक कारण
3) आर्थिक कारण
4) सैनिक कारण
5) तात्कालिक कारण

राजनीतिक कारण

1) **साम्राज्यवादी नीति :-**
⇒ राजकोषीय विनियोग का दौर
⇒ वेलेजली की सहायक संधि

2) **डलहौजी की हड़पनीति :-**
⇒ अवध पर कुशासन का आरोप
⇒ दत्तक पुत्र वैध उत्तराधिकारी नहीं
⇒ नाना साहेब की पेंशन रोकना

3) अंग्रेज मुगलों के उत्तराधिकारी बन गये। 1803 में दिल्ली के किले पर कब्जा कर लिया और ऑक्टरलेक को वहां का रेजीडेंट बनाया।

सामाजिक कारण

1) 1813 के चार्टर एक्ट से ईसाई मिशनरी का भारत आगमन।
2) सामाजिक प्रथाओं और मूल्यों में हस्तक्षेप।
⇒ 1829 का सतीप्रथा निषेध
⇒ बालविवाह निषेध

Digvijay Sir GS

⇒ ठगी प्रथा निषेध
⇒ विधवा पुर्नविवाह अधिनियम
⇒ शिशु हत्या निषेध
3) धार्मिक अयोग्यता अधिनियम (यह धर्मान्तरण को बढ़ावा देता था)

आर्थिक कारण

1) 1765 - 1772 तक बंगाल में द्वैध शासन रहा।
2) औपनिवेशिक प्रणाली

1757 - 1813	1813 - 1858	1858 - 1947
राजकोषीय विनियोग का दौर	मुक्त व्यापार का दौर	वित्तीय पूंजीवाद का दौर

3) अधिकतम लूट का प्रभाव - भीषण अकाल, गरीबी, भुखमरी।
4) कृषि का वाणिज्यकरण किया गया।
5) राजस्व व्यवस्था किसानों के शोषण का पर्याय बनी रही।

सैनिक कारण

1) सैनिकों के साथ पक्षपात पूर्ण व्यवहार
⇒ अखाद्य भोजन
⇒ वेतन / भत्ता कम
⇒ रैंकिंग कम
② सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम आया।
③ पोस्टल सेवा पर शुल्क आरोपित कर दिया।
④ धार्मिक चिन्हों व प्रतीकों की मनाही।

तात्कालिक कारण

1) ब्राउनबैस राइफल के स्थान पर एनफील्ड राइफल आयी। इसमें चर्बी वाले कारतूस लगते थे।

विद्रोह का प्रसार एवं शुरूआत :-

⇒ चर्बीवाले कारतूस के विरोध के परिणामस्वरूप विद्रोह की शुरूआत हुयी।

Digvijay Sir GS

⇒ नई इनफील्ड राइफल का परिक्षण 3 स्थानों पर हो रहा था।
1) स्यालकोट (पंजाब)
2) दमदम (बंगाल)
3) अम्बाला
विरोध के स्वर यहीं से उठने शुरू हुये, परन्तु अंग्रेजों ने उन्हें दबा दिया।
⇒ 29 मार्च 1857 को 34वीं इंफेन्ट्री बटालियन के सैनिक मंगल पाण्डे ने इसका विरोध किया।
⇒ इन्होंने दो अंग्रेज अधिकारियों पर गोली मारकर हत्या कर दी।
1) ह्यूसहियर्स
2) जनरलबाथ
⇒ 8 अप्रैल 1857 को मंगल पांडे को फांसी दे दी गयी।
⇒ तिथि निर्धारित - 31 मई
⇒ प्रतीक चिह्न - कमल और रोटी
⇒ शुरूआत - 11 मई
⇒ मेरठ छावनी के सैनिक इस विद्रोह की शुरूआत करते हैं। ये दिल्ली पहुँच कर बहादुरशाह जफर को विद्रोह का नेता घोषित करते हैं, परन्तु वास्तविक नेतृत्व बख्त खां कर रहे थे।

इतिहास लेखन (1857 के विद्रोह से सम्बंधित) :-

1) सर्वप्रथम सर सैयद अहमद खाँ (विद्रोह के समय बिजनौर में सदर अमीन के पद पर कार्यरत थे) ने 'causes of Indian mutiny' नामक पुस्तक में इसे मात्र एक सैनिक विद्रोह कहा।
2) विनायक दामोदर सावरकर ने इसे "भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम" कहा। (मूलतः मराठी भाषा में थी)
3) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1857 की क्रांति का आधिकारिक इतिहास लेखन का कार्य प्रारम्भ करवाया गया। सरकार ने R.C मजूमदार को चुना। इन्होंने "सिपॉय म्यूटिनी एण्ड द रिवोल्ट ऑफ 1857" पुस्तक में इसे 'न तो प्रथम न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम' कहा।
4) सुरेन्द्रनाथ सेन को सरकार ने आधिकारिक इतिहासकार चुना। इन्होंने "1857" नामक पुस्तक में इसे 'राष्ट्रीयता के अभाव में भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' कहा।

Digvijay Sir GS

अन्य पुस्तकें :-

1) SB Chaudhary - Civil Rebellion in the Mutiny.
2) Ashok Mehta - The Great Rebellion
3) Charles Balls - History of Indian Mutiny.

	प्रसार क्षेत्र	नेता	दमनकर्ता
1)	कानपुर	नाना साहेब	नील व कैम्पबेल
2)	झांसी	रानी लक्ष्मीबाई	जनरल ह्यूरोज
3)	अवध	बेगम हजरतमहल	कैम्पबेल
4)	दिल्ली	बहादुरशाह जफर (वास्तविक - बख्त खां नेतृत्व)	निकोलसन व हडसन
5)	जगदीशपुर / आरा	बाबू कुंवर सिंह	विलियम टेलर
6)	रूहेलखण्ड क्षेत्र (बरेली)	खान बहादुर खान	जनरल ह्यूरोज
7)	फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला	कैम्पबेल
8)	मथुरा	देवीसिंह	
9)	असम	मणिरामदत्त	
10)	इलाहाबाद	लियाकतअली	कर्नल नील
11)	फतेहपुर	अजीमुल्ला	जनरल रेनर्ड
12)	गोरखपुर	गजाधर सिंह	
13)	मेरठ	रावकदमसिंह	

Digvijay Sir GS

नाना साहेब :-

⇒ वास्तविक नाम - धुंधूपन्त
⇒ अंतिम पेशवा बाजीराव II के दत्तक पुत्र हैं।
⇒ बाजीराव II की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने नाना साहेब की पेंशन रोक दी।

रानी लक्ष्मीबाई :-

⇒ वास्तविक नाम - मणिकर्णिका
⇒ बचपन का नाम - मनु

⇒ मूलतः बनारस की रहने वाली थी।
⇒ शादी झांसी के राजा गंगाधर राव के साथ हुयी।
⇒ 1853 में लॉर्ड डलहौजी की हड़पनीति के तहत झांसी का विलय कर लिया गया। (दत्तक पुत्र वैध उत्तराधिकारी नहीं होगा यह आरोप लगाकर)

बेगम हजरत महल :-

⇒ इन्हें 'महकपरी' के नाम से भी जाना जाता है।
⇒ अपने बेटे बिरजिस कादिर को नवाब बनाकर उसके संरक्षक के तौर पर शासन कर रही।
⇒ आउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर उसे ब्रिटिश राज्य में विलय कर लिया जाता है।

प्रभाव :-

1) भारत शासन अधिनियम 1858 लाया गया।
2) ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी से भारत का प्रशासन छीनकर सीधे क्राउन ने अपने हाथों में ले लिया।
3) गवर्नर जनरल का पद अब वायसराय कर दिया गया।
4) अंग्रेज अब भारतीयों के सामाजिक व धार्मिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगें।
5) सेना में पहले अनुपात 5:1 था, उसे घटा दिया। पीलकमीशन के आधार पर यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ा दिया।
6) 1784 से भारत में चला आ रहा द्वैध शासन समाप्त हो गया।
7) भारत राज्य सचिव और उसकी परिषद की नियुक्ति की गयी।

कांग्रेस (प्रमुख अधिवेशन एवं विचारधारा)

कांग्रेस अधिवेशन:-

① बम्बई अधिवेशन (1885)

② कलकत्ता अधिवेशन (1886):-

⇒ अध्यक्षता - दादाभाई नौरोजी

⇒ इस अधिवेशन में कांग्रेस के सदस्यों की संख्या 434 थी।

⇒ दादा भाई नौरोजी को 'The grand old man of India', 'Mr. Narrow Margin', 'Hope of India' कहकर सम्बोधित किया गया।

⇒ महात्मा गांधी ने दादा भाई नौरोजी को 'भारत के पितामह' की संज्ञा दी।

दादा भाई नौरोजी -

① 1867 - 'इंग्लैण्ड डेब्ट्स टू इंडिया' (सर्वप्रथम धन के निष्कासन पर चर्चा)

② 1901 - 'Poverty and unbritish rules in India' (भारतीयों की प्रतिव्यक्ति आय 20 ₹/व्यक्ति/वर्ष)

③ 1892 - उदारवादी दल की तरफ से चुनाव लड़े। हाउस ऑफ कॉमन्स के लिए चुने जाने वाले पहले भारतीय थे। (फिंसबरी निर्वाचन क्षेत्र से)

④ 1893 में पुनः कांग्रेस अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया गया।

⑤ तीन बार कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की।

i) 1886 - कलकत्ता
ii) 1893 - लाहौर
iii) 1906 - कलकत्ता

3) मद्रास अधिवेशन (1887):-

⇒ अध्यक्षता - बदरूद्दीन तैयब जी

⇒ प्रथम मुस्लिम जिन्होंने कांग्रेस के किसी अधिवेशन की अध्यक्षता की।

⇒ कार्यभार का जिम्मा 'सब्जेक्ट कमिटी' को सौंपा गया।

⇒ प्रथमअवसर जब आमजनता से कांग्रेस में शामिल होने की अपील की जाने लगी और भ्रष्ट अंग्रेज अधिकारियों की खुली आलोचना की गयी।

⇒ प्रथमअवसर जब किसी भारतीय भाषा में भाषण दिया गया। (तमिल) मद्रास म्यूनिसिपल कमिश्नर और लोकल बोर्ड के सदस्य 'मूकनसरी' ने भाषण दिया।

Digvijay Sir GS

⇒ प्रथम अधिवेशन जब अंग्रेज प्रशासक और डफरिन कांग्रेस विरोधी होने लगे और कांग्रेस को समाप्त करने की कोशिश करने लगे।

4) इलाहाबाद अधिवेशन (1888):-

⇒ अध्यक्षता - जॉर्जयूल
⇒ प्रथम यूरोपीय जिन्होंने किसी कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की।
⇒ कांग्रेस के विरोध में अंग्रेजों ने एकगुट खड़ा किया।
⇒ बनारस के राजा शिव प्रसाद 'सितारेहिन्द' और सर सैयद अहमद खां को ढाल बनाकर अंग्रेजों ने 'इण्डियन पैट्रियाटिक एसोसिएसन' नामक संस्था बनवायी। (1888)
⇒ लाला लाजपत राय ने इसी अधिवेशन में भाग लिया। प्रथम अवसर जब किसी ने हिन्दी में भाषण दिया।
⇒ लन्दन में 'ब्रिटिश इण्डिया कमेटी' नामक संस्था बनी जो भारतीयों के हितों का प्रतिनिधित्व करती है। (अध्यक्षता - विलियम डिग्बी)
⇒ 1889 में 'इंडिया' नामक पत्रिका का सम्पादन प्रारम्भ किया गया।

यूरोपीय जिन्होंने कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की:-

वर्ष	अध्यक्ष	अधिवेशन
1888	जॉर्जयूल	इलाहाबाद
1889	विलियम वेडरबर्न	बम्बई
1894	अल्फ्रेड वेब	मद्रास
1904	हेनरी कॉटन	बम्बई
1910	विलियम वेडरबर्न	इलाहाबाद
1917	एनी बेसेंट	कलकत्ता
1933	नलिनीसैन गुप्ता	कलकत्ता

1888 B/C विलियम डिग्बी

पहली महिला जिन्होंने कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की

Note:- विलियम वेडरबर्न - एकमात्र ऐसा यूरोपीय जिसने कांग्रेस के दो अधिवेशन की अध्यक्षता की।

5) पांचवा अधिवेशन (बम्बई) - 1889:-

⇒ ब्रिटिश सांसद चार्ल्स ब्राडले ने दर्शक के रूप में हिस्सा लिया।
⇒ अध्यक्षता - विलियम वेडरबर्न

कांग्रेस

1) नरमदल / उदारवाद
(evolutionaries)
[1885 – 1905]

i) शुरूआती कांग्रेसी जिनकी मांगे उदार थी। अंग्रेजों के किसी भी ऐसी मांग को रखने से बचते थे, जिससे अंग्रेजो और कांग्रेस के बीच तनावपूर्ण स्थिति बने।

ii) ये अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास करते थे और उनको आधुनिकता का पर्याय मानते थे।

iii) इस बात का श्रेय दिया जाता है, इन्होंने धन के निकास को भारतीयों के समक्ष रखा और अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों की आलोचना की।

① गोपाल कृष्ण गोखले
② सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
③ फिरोज शाह मेहता
④ दादाभाई नौरोजी

2) गरमदल / उग्रवाद
(Revolutionaries)
[1905 – 1920]

i) ये अंग्रेजों के समक्ष स्वशासन व स्वराज जैसी मांगों को रखते हैं।

ii) स्वराज हेतु आमूलचूल परिवर्तन की बात करते हैं।

iii) अंग्रेजों की न्यायप्रियता में कोई विश्वास नहीं और रेलवे के विकास की निंदा करते हैं।

iv) ये आक्रामक मांगे रखते हैं।

① बाल गंगाधर तिलक
② लाला लाजपत राय
③ विपिन चन्द्र पाल

आधुनिकता का पर्याय नहीं मानते

3) गांधीवाद
(1920 – 1942)

उदारवादियों के महत्वपूर्ण कार्य:-

① अपनी मांगों को मनवाने के लिये उदारवादियों ने 1887 में लंदन में भारतीय सुधार समिति की स्थापना की।
अध्यक्षता – दादाभाई नौरोजी

② दादा भाई नौरोजी ने धन के निष्कासन का सिद्धान्त दिया।
⇒ 1867 – इंग्लैण्ड डेब्ट्स टू इंडिया
⇒ 1901 – पॉवर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल्स इन इण्डिया (प्रमुख मद – होम चार्जिज)
⇒ "evils of all evils" की संज्ञा दी।

③ ब्रिटिश इण्डिया कमेटी (1889) – कांग्रेस की ही लंदन में स्थापित संस्था थी। 'इण्डिया' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। (प्रथम संपादक – विलियम डिग्बी)

④ 1886 में उदारवादियों के प्रयासों से ही लोकसेवा आयोग गठित किया गया। इनकी ये मांग थी कि इंग्लैण्ड एवं भारत दोनों में एक ही समय ICS की परीक्षा करवायी जाये।

⑤ भारतीय व्यय की समीक्षा हेतु वेलबी आयोग का गठन किया गया।

⑥ 1892 के परिषद अधिनियम से 3 भारतीयों को विधानपरिषद में शामिल किया गया। (गोखले, बनर्जी, मेहता)

⑦ 1909 के भारतपरिषद / मार्ले-मिण्टो सुधार बनाने में गोपालकृष्ण गोखले का योगदान माना जाता है।

उदारवादियों की आलोचना:-

① अरविंदो घोष ने उदारवादियों की अनुनय विनय की नीति की आलोचना की।
- ⇒ अपने पत्र 'New Lamps for the old' में आलोचना की।
- ⇒ सावित्री नामक महाकाव्य लिखा।
- ⇒ इंदुप्रकाश नामक पत्र निकाला।

② बाल गंगाधर तिलक:-

पत्र – i) मराठा – (अंग्रेजी)
ii) केसरी – (मराठी)

पुस्तक- i) गीता रहस्य
ii) द आर्कटिक होम इन द वेदाज
iii) ओरियॉन

③ विपिन चन्द्रपाल – न्यू इण्डिया

④ लाला लाजपत राय – यंग इण्डिया, पंजाबी

Dovijay Sir GS

कांग्रेस प्रमुख अधिवेशन एवं विचारधारा

प्रमुख कांग्रेस अधिवेशन

	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	विशेष
①	1896	कलकत्ता	रहीमतुल्ला सयानी	• रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा वन्देमातरम् गाया गया। (बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा रचित आनन्दमठ से लिया गया है)
②	1899	लखनऊ	रमेशचन्द्र दत्त	• भूराजस्व के स्थायी निर्धारण की मांग की गयी।
③	1901	कलकत्ता	दिनशा वाचा	• महात्मा गांधी ने सर्वप्रथम कांग्रेस के इसी अधिवेशन में भाग लिया था।
④	1905	बनारस	गोपालकृष्ण गोखले	• सरकार के खिलाफ स्वदेशी आन्दोलन की घोषणा।
⑤	1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	• कांग्रेस ने चार प्रस्तावों को स्वीकार किया। 1) स्वदेशी 2) बहिष्कार 3) राष्ट्रीय शिक्षा 4) स्वराज
⑥	1907	सूरत "सूरत – फूट"	रासबिहारी घोष	• कांग्रेस का दो वर्गों में विभाजन 1) गरमपन्थी 2) नरमपन्थी
⑦	1910	इलाहाबाद	विलियम वेडरबर्न	• 1909 के भारत परिषद अधिनियम में साम्प्रदायिक निर्वाचन प्रणाली की मुहम्मद अली जिन्ना ने आलोचना की।
⑧	1911	कलकत्ता	बी. एन. धर	• पहली बार राष्ट्रीयगान जन गण मन गाया गया। (रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित)

9	1915	बम्बई	सर सत्येन्द्र प्रसन्न सिन्हा	• कांग्रेस के संविधान में परिवर्तन किया गया।
10	1916	लखनऊ "लखनऊ समझौता"	अम्बिका चरण मजूमदार	• नरमपंथी एवं गरमपंथियों के मध्य एकता। • कांग्रेस व मुस्लिम लीग के मध्य समझौता हुआ।
11	1917	कलकत्ता	एनी बेसेंट	• कांग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष
12	1918	बम्बई (विशेष सत्र)	सैयद हसन इमाम	• विवादास्पद मान्टेग्यू - चेम्सफोर्ड सुधार के सम्बंध में बुलाया गया।
13	1919	अमृतसर	मोतीलाल नेहरू	• कांग्रेस ने असहयोग आंदोलन का समर्थन किया।
14	1920	कलकत्ता (विशेष सत्र)	लाला लाजपत राय (एकमात्र गरमपंथी जिसे किसी कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता सौंपी गयी)	• असहयोग आंदोलन के सन्दर्भ में।
15	1920	नागपुर	विजयराघवाचारी	• भाषायी आधार पर कांग्रेस की कार्यसमितियों का पुनर्गठन।
16	1922	गया	चित्तरंजन दास	• सीआर दास व अन्य नेता कांग्रेस से अलग होकर स्वराज पार्टी का गठन करते हैं।
17	1924	बेलगाँव	महात्मा गांधी	• एकमात्र अधिवेशन जिसकी अध्यक्षता गांधी ने की।
18	1925	कानपुर	सरोजनी नायडू	• पहली भारतीय एवं दूसरी महिला जो कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षा बनी।
19	1927	मद्रास	डॉ॰ एम॰ ए॰ अन्सारी	• साइमन कमीशन के बहिष्कार के खिलाफ प्रस्ताव पारित। • कांग्रेस के द्वारा पूर्णस्वराज संकल्प को अपनाया गया।

20	1928	कलकत्ता	मोतीलाल नेहरू	• अखिल भारतीय युवा कांग्रेस का गठन
21	1929	लाहौर	जवाहर लाल नेहरू	• पूर्णस्वराज प्रस्ताव को पारित किया गया। • 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वाधीनता दिवस मनाने का निर्णय लिया गया।
22	1931	करांची	सरदार वल्लभ भाई पटेल	• मौलिक अधिकारों और आर्थिक नियोजन पर संकल्प पारित किया। • गांधी - इरविन समझौते का समर्थन किया गया। • दूसरे गोलमेज सम्मेलन में INC की तरफ से गांधी को प्रतिनिधि बनाकर लंदन भेजा गया।
23	1934	बम्बई	राजेन्द्र प्रसाद	• कांग्रेस के संविधान में संशोधन किया जाता है।
24	1936	लखनऊ	जवाहरलाल नेहरू	• समाजवादी विचारों को प्रसारित किया जाता है।
25	1937	फैजपुर	जवाहरलाल नेहरू	• किसी गाँव में होने वाला प्रथम अधिवेशन था।
26	1938	हरिपुरा	सुभाषचन्द्र बोस	• इस समय इनकी लोकप्रियता चरम पर थी।
27	1939	त्रिपुरी	सुभाषचन्द्र बोस ↓ राजेन्द्र प्रसाद	• कांग्रेस से इस्तीफा दे देते हैं। • फारवर्ड ब्लॉक नामक संगठन बनाते हैं।
28	1940	रामगढ़	अबुलकलाम आजाद	• सर्वाधिक समय तक कांग्रेस के अध्यक्ष बने रहें।
29	1946	मेरठ	जे. बी. कृपलानी	• आजादी से पूर्व का कांग्रेस अधिवेशन।

Note :- 1941 - 1945 तक अधिवेशन नहीं हुआ।
① भारत छोड़ो आंदोलन ③ द्वितीय विश्व युद्ध
② शाही नौसेना विद्रोह

Digvijay sir